INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS

VOLUME 2, ISSUE 8, AUGUST 2014

ISSN-2320-2882

ORIGINAL ARTICLE

मादक पदार्थों का सेवन करने वाले परिवारों के किशोर विद्यार्थियों के आत्मसंबोध का अध्ययन

डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव
(प्राचार्य)
महाराजा सूरजमल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, भरतपुर (राज.)

शीला सिंह
शोधार्थी
पेसिफिक एकेडमी ऑफ हायर एजुके न एण्ड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर (राज.)

1. शोध सार :–

मादक पदार्थों का सेवन करने वाले सामान्य व अनुसूचित जाति के परिवारों के विद्यार्थियों के सामाजिक व शैक्षिक समायोजन में क्या कोई अन्तर पाया जाता है ? प्रस्तुत शोध इसी उद्देश्य को लेकर किया गया है जिसमें पाया गया कि राजस्थान के भरतपुर जिले के मादक पदार्थों का सेवन करने वाले सामान्य व अनुसूचित जाति के परिवारों से आने वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक व सामाजिक समायोजन में जाति के आधार पर कोई अन्तर नहीं पाया जाता है।

2. प्रस्तावना :–

मनुष्य इस सृष्टि का एक विचित्र प्राणी है। जिसके जीवन में आनन्द है तो दुःख भी है, अमृत है तो विष भी है। यह विचित्र बात है कि मनुष्य ने अपने स्वास्थ्य के लिये अनुकूल खाद्य पदार्थों या पेय पदार्थों का आविष्कार किया है तो कुछ ऐसे पदार्थ भी उसने खोज निकाले है जो उसके लिये स्वास्थ्य की दृष्टि से नितान्त अहितकर है। ऐसे पेय पदार्थ मादक द्रव्यों के रूप में जाने जाते हैं।

उच्च वर्ग के स्त्री पुरूष अपनी शान शौकत के लिये तथा निम्न वर्ग अपनी थकान मिटाने के लिये या मनोरंजन के लिये मादक पदार्थों का सेवन करते हैं। बालक जब अपने माता–पिता को भाराब के नशे में आते हुए देखता है तो वह डर जाता है, चूँकि बालक का मन व मस्तिष्क कोमल होता है जो इन बातों से जल्दी कुंठित होकर विचलित होने लगता है। उसमें संवेगात्मक अस्थिरता होने लगती है। यह स्थिति किशोरावस्था तक अपनी चरम सीमा तक पहुँच जाती है और बालक का मन विचलित होकर गलत रास्ते पर जाने लगता है। यदि हम अपने देश का भविष्य उज्जवल बनाना है तो आने वाली पीढ़ीयों को

Please cite this Article as : *डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव,शीला सिंह*''मादक पदार्थों का सेवन करने वाले परिवारों के किशोर विद्यार्थियों के आत्मसंबोध का अध्ययन' :International Journal Of Creative Research Thoughts, Volume 2, Issue.8, August 2014

इन मादक पदार्थों से कोसों दूर रखना होगा तथा इन घातक पदार्थों को जड़ मूल से नष्ट करना होगा। तभी यह देश व समाज आगे बढ़ पायेगा।

किशोर विद्यार्थियों के शैक्षिक व सामाजिक समायेाजन पर उनके सामान्य या अनुसूचित जाति के होने के क्या प्रभाव पड़ता है ? प्रस्तुत शोध कार्य के इसी विषय पर अध्ययन किया गया है।

3. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन : –

शोधार्थी ने विभिन्न शोध अध्ययनों का अध्ययन किया। जिसमें विद्यार्थियों के आत्मसंबोध का मापन किया गया है। बी. राय (2009) असंज्ञानात्मक कारकों का अनुसूचित जाति व सामान्य जाति के विद्यार्थियों के आत्मसंबोध पर प्रभाव का अध्ययन किया तथा पाया कि आत्मसंबोध व समायोजन में अनुसूचित जाति व सामान्य जाति के विद्यार्थियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। डॉ. कुमार अशोक (2012) ने आत्मसंबोध का अध्ययन लिंग के सन्दर्भ में किया। इसमें पाया कि कुल न्यादर्श में से छात्राओं की तुलना में छात्रों का तथा पूर्व किशोर अवस्था की तुलना में उत्तर किशोरावस्था में आत्मसंबोध उच्च स्तर का पाया गया।

4. शोध की आवश्यकता का महत्व :–

शोध एक सोद्देश्य एवं विचारशील प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य ज्ञान को विकसित एवं परिमार्जित कर उपयोगी बनाना है। वर्तमान युग में मादक पदार्थों का सेवन उत्तरोत्तर तीव्र गति से बढ़ रहा है। मादक पदार्थों के सेवन की समस्या व्यक्तिगत न होकर सामाजिक समस्या हो गई है। जिन परिवारों में मादक पदार्थों का सेवन किया जाता है। वहाँ के किशोर विद्यार्थी न तो परिवार में, न ही अपने विद्यालय में और न ही समाज में समायोजन कर पाते हैं।

मादक पदार्थों का सेवन करने वाले व्यक्तियों पर अनेक अध्ययन हुए हैं। लेकिन मादक पदार्थों का सेवन करने वाले माता–पिता के किशोर विद्यार्थियों के समायोजन व आत्मसंबोध तथा किशोर स्वयं अपने बारे में क्या धारणा रखता है ? इसके सम्बन्ध में विशेष कार्य नहीं हुआ है। अतः प्रस्तुत शोध इसी विशय पर आधारित है।

5. शोध उद्देश्य :–

(क) मादक पदार्थों का सेवन करने वाले सामान्य व अनुसूचित जाति के परिवारों के छात्रों के आत्मसंबोध का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(क) मादक पदार्थों का सेवन करने वाले सामान्य व अनुसूचित जाति के परिवारों की छात्राओं के आत्मसंबोध का तुलनात्मक अध्ययन करना।

6. शोध विधि :–

प्रस्तुत भाोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

7. न्यादर्श :–

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में राजस्थान प्रान्त के भरतपुर जिले के मादक पदार्थों का सेवन करने वाले सामान्य व अनुसूचित जाति के 300 परिवारों के 600 छात्र व छात्राओं का निम्नांकित रूप से यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया है।

चयनित न्यादर्श का विवरण –

क्र. स.	क्षेत्र	योग
1.	मादक पदार्थों का सेवन करने वाले सामान्य जाति के परिवार	150
2.	मादक पदार्थों का सेवन करने वाले अनुसूचित जाति के परिवार	150
	कुल परिवार	300

क्र. स.	क्षेत्र	योग
1.	सामान्य जाति के किशोर छात्र	150
2.	सामान्य जाति की किशोर छात्रायें	150
3.	अनुसूचित जाति के किशोर छात्र	150
4.	अनुसूचित जाति की किशोर छात्रायें	150
	कुल छात्र व छात्रायें	600

8. उपकरण :–

शोधार्थी ने शोधकार्य में दत्त संकलन के लिये स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया। जिसकी विश्वसनीयता अर्द्ध विच्छेद विधि से निकाली गई जिसमें सम एवं विषम कथनों के बीच सह–सम्बन्ध का मान 0.723 प्राप्त हुआ।

9. क्रिया विधि :–

इस प्रश्नावली में कुल 48 प्रश्न है जो कि आत्मसंबोध के 6 अलग–अलग आयामों से सम्बन्धित है। उक्त आत्मसंबोध प्रश्नावली को विभिन्न विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोरावस्था के छात्र–छात्राओं को दिया गया और उन्हें आवश्यक निर्देश दिये गये। उन्हें समझाया गया कि इस प्रश्नावली में 5 विकल्प हैं। उन्हें सम्भावित उत्तर को चिन्हित करना है। तत्पश्चात् सभी अंकों को कुल जोड़कर विद्यार्थी का आत्मसंबोध ज्ञात कर लिया जाता है। अधिक अंक का तात्पर्य आत्मसंबोध अधिक है। कम से कम अंक का तात्पर्य आत्मसंबोध का कम होना है। इस प्रश्नावली में कुल 48 प्रश्न है। जिसका कुल योग 240 है। अंकों के अनुसार विद्यार्थियों का आत्मसंबोध निम्न प्रकार है।

अंक	स्तर
193 से 240	उच्च आत्मसंबोध
145 से 192	औसत से ऊपर आत्मसंबोध
97 से 144	औसत के समान आत्मसंबोध
49 से 96	औसत के नीचे आत्मसंबोध

10. सांख्यिकी तकनीकी :–

समायोजन प्रश्नावली के माध्यम से संग्रहित किये गये प्रदत्तों का सारणीयन किया गया। तत्पश्चात् मध्यमान प्रमाणिक विचलन एवं टी परीक्षण का उपयोग प्रदत्तों का विश्लेशण करने हेतु किया गया।

11 प्रदत्तों का विश्लेशण एवं व्याख्या :–

सारणी संख्या – 1

क्र.स.	परिवार	विद्यार्थी	कुल	मध्यमान	प्रमाप	टी–अनुपात	सार्थक

			संख्या		विचलन		स्तर
1	सामान्य	छात्र	150	163.20	16.29	4.00	2.00
2	अनुसूचित	छात्र	150	159.23	13.22		

df = 300

सारणी संख्या – 1 दर्शाती है कि मादक पदार्थों का सेवन करने वाले सामान्य जाति के परिवारों के छात्रों में अनुसूचित जाति के छात्रों की तुलना में आत्मसंबोध अधिक है। अतः जाति का आत्मसंबोध पर प्रभाव पड़ता है।

सारणी संख्या – 2

क्र.स.	परिवार	विद्यार्थी	कुल संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–अनुपात	सार्थक स्तर
1	सामान्य	छात्राएँ	150	164.62	16.62	4.29	2.00
2	अनुसूचित	छात्राएँ	150	160.02	15.73		

df = 300

सारणी संख्या – 2 दर्शाती है कि मादक पदार्थों का सेवन करने वाले सामान्य जाति के परिवारों की छात्राओं में अनुसूचित जाति की छात्राओं की तुलना में आत्मसंबोध अधिक है। अतः जाति का आत्मसंबोध पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है।

12. निष्कर्ष :–

(क) मादक पदार्थों का सेवन करने वाले सामान्य व अनुसूचित जाति के परिवारों के किशोर छात्रों के आत्मसंबोध में जाति के आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया। जिससे पता चलता है कि जाति का आत्मसंबोध पर प्रभाव पड़ता है।

(ख) मादक पदार्थों का सेवन करने वाले सामान्य व अनुसूचित जाति के परिवारों की किशोर छात्राओं के आत्मसंबोध में जाति के आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया। जिससे पता चलता है कि जाति का आत्मसंबोध पर प्रभाव पड़ता है।

13. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. Best John W. (2003), "Research in Education", New Delhi, Prentice Hall of India Pvt. Ltd.
2. Dandapani, S. (1971), "Fundamental of Social Survey and Research Methods", Delhi. The Scholars Foundations, Shanti Villas.
3. Edwards, A.L. (1957), "Techniques of Attitude Scale Construction", New York, Appleton Century, Crofts.
4. श्रीवास्तव, डी. एन., (2004), ''मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी'' सत्तरहवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
5. श्रीवास्तव, डी. एन. एवं बी. एन., (2004), ''मनोवैज्ञानिक अनुसंधान एवं मापन'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
6. श्रीवास्तव, डी. एन., (2004), ''व्यक्तित्व का मनोविज्ञान'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
7. भार्मा, बी. एन., ''अधिगमकर्त्ता का विकास, साहित्य प्रकाशन, आगरा।
8. मिश्र, डॉ. पी.सी., ''विकासात्मक मनोविज्ञान'', साहित्य प्रकाशन, आगरा।
9. सैनी, डॉ. बी. एल., ''शिक्षा मनौविज्ञान'', स्वाति प्रकाशन, जयपुर।
10. सक्सैना, सरोज, ''शिक्षा सिद्धान्त'', साहित्य प्रकाशन, आगरा।
11. नीता, डॉ. त्यागी, ''नैतिक शिक्षा'', साहित्य प्रकाशन, आगरा।